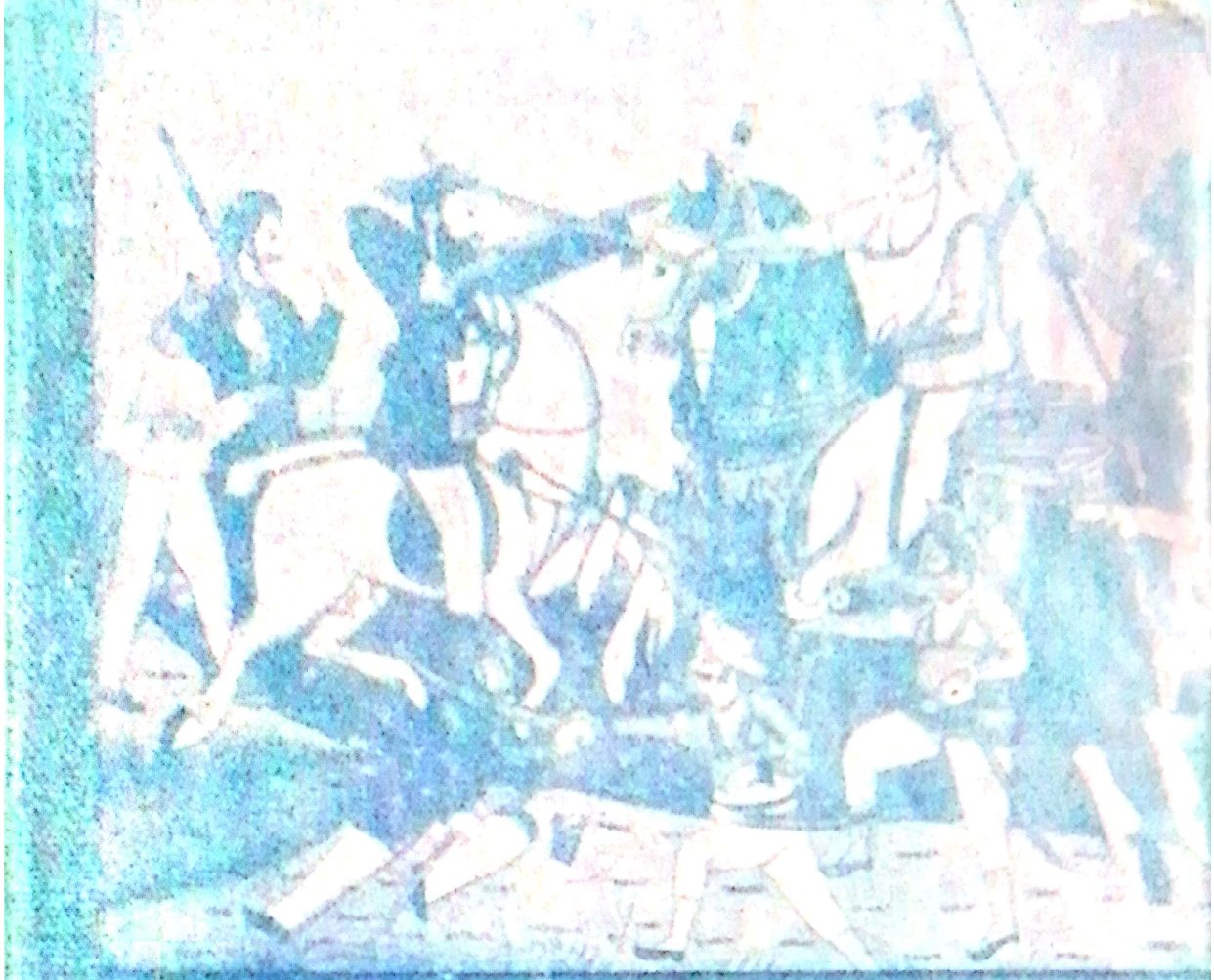

झाँसी की रानी

लक्ष्मीबाई - चरित

आल्हा - गीत - शैली में
बुन्देली लोकभाषा - काव्य

- हरिकेश मिश्र

बुन्देल भारती - प्रकाशन

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशक :
श्रीमती इन्दुप्रभा
बुंदेलभारती - प्रकाशन
झाँसी (उ०प्र०) : होशंगाबाद (म०प्र०)

प्रथम मुद्रण :
पूर्वखण्ड : लक्ष्मीबाई जन्मदिवस, १९८९
उत्तरखण्ड : लक्ष्मीबाई बलिदान-दिवस १९९०
सर्वाधिकार : प्रकाशकायत्त
© श्रीमती इन्दुप्रभा

मूल्य –
पूर्वखण्ड : चालीस रुपया
उत्तरखण्ड : पचपन रुपया
दोनों खण्ड समवेत :
सजिल्द : नब्बे रुपया

श्रीराम प्रेस
खत्रयाना मार्ग, झाँसी में मुद्रित

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

पृष्ठभूमि ६
बुंदेलखण्ड की आल्हा परम्परा १२

पूर्व खण्ड
(जन्म से वैधव्य तक)

पहला सर्ग :
जन्म और बालपन १९
दूसरा सर्ग :
विवाह की भूमिका २९
तीसरा सर्ग :
झाँसी की पृष्ठभूमि ३७
चौथा सर्ग :
मनू का विवाह ५९
पाँचवाँ सर्ग :
लक्ष्मीबाई का प्रभाव ७१
छटा सर्ग :
पुत्र का जन्म और अवसान ९५
सातवाँ सर्ग :
राजा-मरण और झाँसी-हरण १०३

उत्तर खण्ड
(विद्रोह से बलिदान तक)

आठवाँ सर्ग :
सत्तावनी जन-विद्रोह १२३
नौवाँ सर्ग :
लक्ष्मीबाई का राज प्रबन्ध १४३
दसवाँ सर्ग :
नत्थेखाँ का आक्रमण १६७
ग्यारहवाँ सर्ग :
अंग्रेजों से युद्ध १८५
बारहवाँ सर्ग :
झाँसी - बिजन २१९
तेरहवाँ सर्ग :
कोंच-कालपी का समर २२५
चौदहवाँ सर्ग :
बलिदानी संग्राम २३३
बुंदेली शब्दार्थ २४९

Scanned with OKEN Scanner

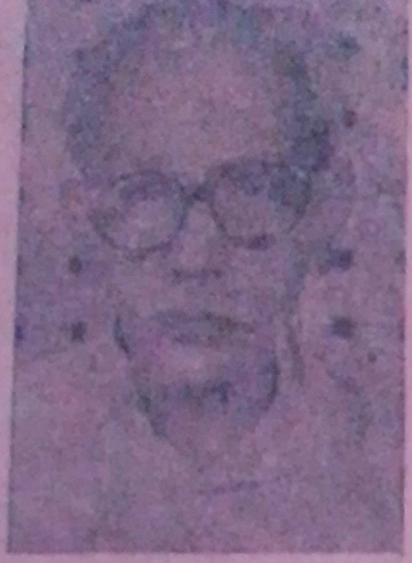

काव्यकार

पं० द्वारिकेश मिश्र

हिन्दी काव्यशास्त्र के प्रथम आचार्य महाकवि केशवदास के वंशज पण्डित द्वारिकेश मिश्र का जन्म फुटेरा-पिछोर (पूर्व ओरछा राज्य अब जिला झाँसी) में सन् १९२९ के १४ अक्टूबर को माता राधाबाई की कोख से हुआ था। पिता स्व. पं० तुलसीदास मिश्र के ज्येष्ठ पुत्र द्वारिकेशजी ने शालीय शिक्षा चौथी कक्षा तक ही पाई। स्वाध्याय से संस्कृत, हिन्दी, उर्दू एवं अंग्रेजी का यथेष्ट ज्ञान अर्जित किया। इसके पूर्व छोटी अवस्था में मिश्र जी मथुरा की गलियों में गा-गाकर गाने की किताबें बेचा करते थे, उससे उन्हें लय का अभ्यास हुआ। ब्रज-साहित्य के प्रख्यात विद्वान बाबू प्रभुदयाल मीतल के सम्पर्क से उनमें साहित्यिक अभिरुचि का उदय हुआ। फिर झाँसी आये, चाचा कविवर श्रवणेशजी के आश्रय में कविता-रचना और पत्रकारिता में प्रवेश किया। झाँसी से मिश्रजी ने पहला पद्यमय दैनिक पत्र प्रकाशित किया था। बाद को अनेक साप्ताहिक पत्रों के और कई वर्ष भोपाल में 'दैनिक मध्यदेश' के प्रधान सम्पादक रहे। भोपाल से ही मिश्रजी का विचार-प्रधान साप्ताहिक 'बहुमत' निकला, जो अबतक लोगों को याद आता है। अनेक उत्कृष्ठ अभिनन्दन ग्रन्थों के सम्पादन के अतिरिक्त मिश्रजी ने बहुत से गद्य-पद्य ग्रन्थों की विद्वत्ता पूर्ण गंभीर भूमिकाएँ लिखी हैं। आकाशवाणी केन्द्रों से वार्ताएँ और कविताएँ प्रसारित की हैं। अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे हैं। व्यक्तिगत प्रचार में संकोचशील द्वारिकेशजी की मौन साहित्य सेवाओं के लिए विख्यात तुलसी-पीठ कासगन्ज ने इन्हें 'विद्यावारिधि' की सम्मानोपाधि से सम्मानित किया है। मिश्रजी ने लगभग तीस नाटक, उपन्यास, कहानी, कविताएँ प्रचुर मात्रा में रची हैं। इधर कुछ वर्षों से लोकभाषा बुन्देली में ही पद्य-रचना कर रहे हैं। एक महाकाव्य 'बुन्देलिन' और बुन्देली काव्य 'हरदौल बुंदेला' मुद्रणाधीन है।

—डॉ० मोहनलाल गुप्त 'चातक'
एम. ए., पी-एच. डी.
सचिव, बुन्देलखण्ड हिन्दी-शोध संस्थान

Scanned with OKEN Scanner